आज कैसी विडम्बना है कि मनुष्य प्यार तो चाहता है, लेकिन कहीं कोई प्यार से बात करता है तो संशय होने लगता है कि ये व्यक्ति प्यार से बोल रहा है, क्या चाहिए इसको! जहाँ समझ अर्थात् ज्ञान है, पवित्र भावनाएं हैं, प्रेम है... वहाँ व्यक्ति रिलैक्स फील करता है और वहाँ शांति का वातावरण रहता है।

कौन हूँ मैं...

जान लेंगे तो हर किरदार अच्छी तरह निभा सकेंगे

ज़िंदगी में हम कई मुकाम तय करते हैं। हम कितने ही पार्ट अदा करते हैं, कितने ही रोल निभाते हैं। कभी मैं एक माँ होती हूँ, कभी मैं एक प्रोफेशनल हूँ, कभी मैं एक पत्नी हूँ या फिर कभी कभी मैं कुछ और हो जाती हूँ। लेकिन क्या मैंने कभी सोचा कि वास्तव में मैं हूँ कौन? कई बार ये सवाल उठता है और तब इसका जवाब तलाशना ज़रूरी हो जाता है। कई रोल हम अदा करते हैं और उसको बखूबी निभाते भी हैं और बड़ी जल्दी हम चेंज भी हो जाते हैं। जब मैं एक माँ हूँ तो बहुत सॉफ्ट बनी रहूंगी, जब मैं टीचर हूँ तो बहुत स्ट्रॉन्ग हो जाऊंगी, जब बाहर निकलूंगी तो कुछ और हो जाऊंगी,

लेकिन एक वक्त आता है कि मन पूछता है, मैं हूँ कौन?

कई बार ऐसा होता है कि मन पूछता है कि सारे रोल करते हुए, सारे रोल निभाते हुए कहीं न कहीं मैं कौन हूँ...! जैसे किसी ने कहा कि मैं कलाकार हूँ, तो जो विभिन्न रोल निभा रहे हैं। रोल प्ले करने के बाद भी कलाकार को मालूम होता है कि मैं अमुक हूँ, जिसने ये रोल प्ले किया। लेकिन हम आजकल रोल प्ले करते-करते उस रोल के अन्दर इतना उलझ, फँस जाते हैं कि रोल को ही 'मैं' समझना शुरू कर देते हैं। आप जो भी रोल इस समय प्ले कर रहे हैं, तो एक टाइम में हम एक या दो या तीन रोल अदा कर सकते हैं। क्योंकि बहुत ज़्यादा रोल वेरीयेशन कहीं न कहीं हमारी आंतरिक स्थिति पर प्रभाव डालता है। लेकिन हम बहुत सारे रोल प्ले करते हैं। जैसे-जैसे ये यात्रा आगे बढ़ती जाएगी, हमारे रोल बढ़ते जाएंगे। आप पहले सिर्फ एक बेटी थीं, एक बहन थीं। फिर आप एक पत्नी बनीं, फिर आप एक माँ बनीं, फिर आप किसी की चाची बनीं, किसी की बुआ बनीं। अब आप किसी की नानी बनेंगी, किसी की दादी बनेंगी, रोल तो बढ़ते ही जाएंगे। इतने सारे रोल प्ले करते-करते हम यह भूल जाते हैं कि ये रोल प्ले करने वाला मैं कौन हूँ? यह सबकुछ करते हुए हमें यह जानना चाहिए कि वो कौन है?

कौन ये रोल प्ले कर रहा है?

इसके लिए हमारा जागृत रहना बहुत ज़रूरी है। इस शरीर के द्वारा पार्ट अदा करने वाली शक्ति आत्मा है। एक ज्योति है, जो इस शरीर रूपी वस्त्र को धारण किए हुए है। मैं कौन हूँ? जब मैं इतने सारे रोल अदा कर रही हूँ और बखूबी निभा रही हूँ और इसे एन्जॉय में उसको बखूबी निभा रहे होते, एन्जॉय कर रहे होते, तो हमें टेंशन नहीं आना चाहिए था। आप जानते हैं कि हम कहीं न कहीं अपने आपको भूलते वीकनेस क्या है, तो वह रोल सही रीति से नहीं निभा सकता। अपनी विशेषता को भी पहचानना है। कहीं न कहीं एकाध कमज़ोरी है, उसको भी भी कर रही हूँ, तो क्यों जानना ज़रूरी है? क्या हम सचमुच में उसको एन्जॉय कर रहे हैं, क्या हम सचमुच में उसको बखूबी निभा रहे हैं? यदि हम सचमुच जा रहे हैं। अगर एक्टर को ये नहीं पता होगा कि मेरी शक्ति क्या है, मेरी क्षमता क्या है, मेरी आंतरिक विशेषताएं या गुण क्या हैं, मेरी स्ट्रेंथ क्या है और मेरी पहचानकर दूर करना है। अगर मैं सबकुछ जानते हुए रोल प्ले करूं, तो शायद मैं ये रोल अच्छी तरह प्ले कर सकूं।

भावनाओं में पवित्रता

जिनके अंदर जितनी पवित्र भावनाएं प्रवाहित होती हैं, उतना ही आत्मा का तेज बढ़ता जाता है, आभा बढ़ने लगती है। जहाँ अहंकार है, अशुद्ध भावनाएं हैं, उन सम्बन्धों में कभी भी निःस्वार्थ प्रेम पनप नहीं सकता है। आज हर एक को जीवन में क्या चाहिए? प्रेम चाहिए। एक बच्चे को भी प्यार चाहिए तो बड़े-बुजुर्ग के साथ भी यदि प्यार से व्यवहार करते हैं तो अच्छा लगता है। ऐसा नहीं कि बुजुर्ग ने तो सारा जीवन बहुत प्यार पाया है, इसलिए बुढ़ापे में प्यार नहीं मिला तो चलेगा...नहीं। हर इंसान को प्यार चाहिए और निःस्वार्थ प्यार चाहिए। ये निःस्वार्थ प्यार तभी पनप सकता है जब आपस में सही सामंजस्य हो। जब पवित्र भावनाएं हों तब निःस्वार्थ प्रेम प्रवाहित होता है।

आज कैसी विडम्बना है कि मनुष्य प्यार तो चाहता है, लेकिन कहीं कोई प्यार से बात करता है तो संशय होने लगता है कि ये व्यक्ति प्यार से क्यों बोल रहा है, क्या चाहिए इसको! जहाँ समझ अर्थात् ज्ञान है, पवित्र भावनाएं हैं, प्रेम है...वहाँ व्यक्ति रिलैक्स फील करता है और वहाँ शांति का वातावरण रहता है। वहाँ जीवन में सच्चे सुख का अनुभव होता है। जीवन की सर्वोच्च प्राप्ति आनंद है। आज मानव जीवन में आनंद व खुशी नहीं है। आत्मा का निज गुण ही उसकी शक्ति है। इन गुणों के न होने से आत्मा कमज़ोर हो गई है। आत्मा में ज्ञान की शक्ति, पवित्रता, प्रेम, शांति की शक्ति है। दूसरे शब्दों में कहें तो यही आत्मा का स्वधर्म है। हर चीज़ का अपना गुण धर्म होता है। जैसे पानी का गुणधर्म है शीतलता, अग्नि का गुणधर्म है - गर्म। पानी को कितना भी उबालो, लेकिन उसके बाद पुनः वह अपने शीतल स्वरूप में वापस आ जाता है। भावार्थ यह है कि जैसे हर चीज़ का अपना गुणधर्म है, उसी प्रकार आत्मा का स्वधर्म है शांति। हम प्रार्थना के माध्यम से भी भगवान से मांगते हैं कि हे प्रभु हमें अज्ञान से ज्ञान की ओर ले चलो। आत्मा का शुद्धिकरण करो। हे प्रभु तू प्यार का सागर है, तेरी एक बूंद के प्यासे हम। हमें शांति दो, सुख दो, खुशी दो, हे प्रभु शक्ति दो, निर्बल को बल दो। यही सात गुण तो मांगते रहते हैं। सभी प्रकार के धर्म से ऊपर अध्यात्म है। अध्यात्म हमें इन्हीं सात गुणों को प्राप्त करने की विधि बताता है कि कैसे इन सात गुणों से अपने जीवन को भरें और आत्म-उन्नति को प्राप्त करें। गीता में भी भगवान यही प्रेरणा देते हैं कि स्वधर्म को जागृत करो और उसी के आधार पर युद्ध करो।

मनुष्य अपने स्वधर्म से दूर हो गया और परधर्म के अधीन हो गया है। ज्ञान से विपरीत अहंकार के वश हो गया तो अहंकार परधर्म है। शुद्धि के बजाए मन के अन्दर अपवित्रता आ गई है, ये अपवित्रता परधर्म है। प्रेम के बदले नफरत आ गई है, ये नफरत परधर्म है। शांति के बदले जीवन में क्रोध आ गया है, ये क्रोध परधर्म है। परधर्म के अधीन होने पर ही व्यक्ति स्वयं में सहजता अनुभव नहीं करता है। सात गुणों के बजाए मनुष्य के जीवन में सात अवगुण आ गए हैं - काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या और द्वेष।

वैतूल-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के मुलताई सेवाकेन्द्र में गणतंत्र दिवस पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में मंचासीन हैं स्टेट कैबिनेट मिनिस्टर सुखदेव पांसे, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू तथा ब्र.कु. सुनीता,सारणी।

खोरधा-ओडिशा। 'स्वर्णिम युग के लिए विश्व में ज्ञानोदय' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए लोकसभा सांसद प्रसन्न कुमार पाटशाणी। मंचासीन हैं ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. सुलोचना, वरिष्ठ सम्पादक अरुण पण्डा तथा अन्य।

खलारी-गुमला(झारखण्ड)। ज्ञानचर्चा के पश्चात् एन.के. डकरा क्षेत्र के महा प्रबंधक के.के. मिश्रा तथा उनकी धर्मपत्नी पूनम मिश्रा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कंचन। साथ हैं ब्र.कु. प्रीति।

रामपुर बुशहर-शिमला (हि.प्र.)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रचारक संजीवन जी तथा सुदर्शन गिरी जी महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कृष्णा। साथ हैं ब्र.कु. सावित्री तथा अन्य।

भुवनेश्वर-फॉरेस्ट पार्क(ओडिशा)। कोस्तव ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'पर्सनैलिटी डेवलपमेंट कोर्स' कराने के पश्चात् ब्र.कु. गीता को मोमेन्टो देकर सम्मानित करते हुए प्रो. नमिता महापात्रा। साथ हैं पी.आर.ओ. पार्थ सारथी घोष, साम्य मोहन्ती तथा अन्य।

दिल्ली लॉरेन्स रोड। 'सेल्फ डेवलपमेंट' कार्यक्रम में उपस्थित हैं एस.डी.ओ. टू चांसलर मिनाक्षी शर्मा, राजयोगिनी ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. तनुजा तथा अन्य।